कृति : आपने कभी ख्याल किया

कृतिकार : मुनि प्रज्ञा सागर

प्रकाशक : जैन धर्म संवर्धन संस्थान, अहमदाबाद

प्राप्ति स्थल : श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर भूयंग देव चौराहा, सोला रोड़, अहमदाबाद, श्रावक संघ 14, महादेव नगर सोसायटी, सरदार पटेल सोसायटी के पीछे भरूच– 392002

मूल्य : 10/– रूपये मात्र

आपने कभी ख्याल किया नाम कृति, प्रकृति से पूर्व है और इस कृति से पूर्व है। यह कहना कठिन है कि यह कृति पहले या प्राकृतिक। जैसे मुर्गी पहले या अण्डा यह प्रश्न अनुत्तरित है, वैसे ही इस कृति और प्रकृति के बारे में कुछ कहना कठिन है। कठिन क्यों है ? इसलिए कि प्रकृति बड़ी रहस्यपूर्ण है और प्रकृति के रहस्यो का उद्घाटन करना बड़ी टेढी खीर है। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि हम प्रकृति के रहस्यों का उद्घाटन कर ही नहीं सकते। कर सकते हैं, लेकिन सिर्फ वे जो प्रकृति से जुड़कर जीते हैं। मैंने सुना है, एक व्यक्ति का गधा हो गया। बहुत खोजी, लेकिन गधा का पता न चला, कि वह कहां है ? तब हैरान होकर वह व्यक्ति एक स्थान पर बैठ गया। आंखें बन्द कर ली। कुछ देर बाद उसने अपने दोनों हाथ जमीन में टेक दिये और गधे की तरह चलने लगा। चलते–चलते कुछ ही देर में वह वहां पहुंच गया, जहां एक गड्ढे में उसका गधा गिर पड़ा था। जैसे ही उसने गधे को देखा, चौंक गया। चिल्लाया–मिल गया, मिल गया। फिर गधे को बाहर निकालकर घर ले आया। लोगों ने पूछा–भाई ! तुमने गधा खोजा कैसे ? उसने कहा, जब सीधे तरह से खोजते–खोजते गधा न मिला तो मैंने आंख बन्द कर विचार किया मैं गधा हूॅ। जो एक साधारण से गधे को न खोज सका। यह विचार गहराई पा गया फिर मैंने दोनों हाथ जमीन में कब टेक दिये और कब चलने लगा, मुझे जरा भी ज्ञात नहीं। परन्तु इतना जरूर कह सकता हूॅ कि गधे की खोज मैंने गधे के समान बनकर ही की है।

जिसे भी खोजना है, उसकी तरह बनना अनिवार्य है। भगवान महावीर को खोजना है तो भगवान महावीर की तरह बनकर मुनित्व की साधना करना अनिवार्य है। ऐसे ही प्रकृति के रहस्यों को जानना है तो की जानकारी होना दूसरी बात है। जानना स्वयं का अनुभव है और जानकारी उधार है। दूसरों के द्वारा प्रदत्त उपहार है। परन्तु दुर्भाग्य है इस सदी का कि आज का आदमी जानना तो दूर, प्रकृति के रहस्यों की जानकारी करना भी पसन्द नहीं करता है। यह वजह है कि दोनों दिन आदमी का चिन्तन कुण्ठित होता चला जा रहा है। मैं चाहता हूँ कि आदमी चिन्तन को मुखरता दें। ताकि जीवन मुस्कुराहट से भर सके। आपने कभी ख्याल किया यह कृति आदमी के चिन्तन को चेतना दे। आदमी पुनः सोचना प्रारम्भ करें इसी बात को लक्ष्य में रखकर उद्घाटित की गई है।

याद रहे, यह कृति मेरे द्वारा नहीं लिखी गई है। मेरे द्वारा तो मात्र प्रकृति पर पड़े रहस्य के पर्दे हटाकर उद्घाटित की गई है। मैं उद्घाटन करता हूँ। इस कृति में मेरा अपना कुछ नहीं है। सब तुम्हारा है। तुम्हारे लिए है। मेरा स्वभाव तुम्हारे जैसे नहीं कि मित्र के लिए भोजन की थाली परोसों और मित्र का साथ देने के बहाने स्वयं खाने बैठ जाओं। मैंने तुम्हारे समक्ष पुस्तक के रूप में चिन्तन के स्वादिष्ट भोजन की थाली परोसे दी है। अब यह तुम्हारी पात्रता पर निर्भर करता है कि तुम इसमें से कितना ग्रहण करते हो। कितना बचाते हो और कितना पचाते हो। इस कृति के उद्घाटन में जिन भी मित्रों का प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से संयोग मिला है। वे सब साधुवाद के पात्र है और जिनकी मौन करूणा के सहारे में इस कृति का उद्घाटन कर सका हूँ। ऐसे पूज्य वाद गुरूदेव भगवन् श्री पुष्पदन्तसागर जी महाराज का मैं सदा से कृपा पात्र रहा हूँ। भगवन श्री। सदैव मुझ पर अपनी कृपा बरसाते रहे यह विनय है। भगवन् श्री को नम निवेदित करते हुए समग्र विनम्रता के साथ यह कृति ....

....
....